बनी हुई सड़कों को फिर से बनाएंगे एफएमडीए के धंधेबाज अफसर

ब्लैकलिस्टेड ठेकेदारों ने नई सरकारी एजेंसी में भी की घुसपैठ, उन्हीं की सलाह पर बन रहे प्रोजेक्ट

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: सरकार का पैसा ठिकाने लगाने का कोई मौका आला अफसर जाने नहीं देते। हाल ही में गठित फरीदाबाद म्यूनिस्पल डेवलेपमेंट ऑथरोटी (एफएमडीए) के अफसर स्मार्ट रोड के नाम पर ऐसे प्रोजेक्ट को फिर से जिन्दा कर रहे हैं, जिन पर पहले ही पैसा खर्च हो चुका है या कुछ काम भी हो चुका है। नए पुराने प्रोजेक्ट के घालमेल की वजह ही पैसा कमाना है। इस वक्त शहर की एक सड़क चर्चा का विषय है जिसे एफएमडीए बनाने जा रहा है।

चिमनीबाई धर्मशाला -तिकोना पार्क रोड घोटाला

नगर निगम फरीदाबाद (एमसीएफ) ने बहुत पहले तिकोना पार्क से चिमनीबाई धर्मशाला तक सड़क बनाने का 9.29 करोड़ का टेंडर पास किया था। यह टेंडर एक बदनाम ठेकेदार आर.के.गांधी को मिला था। इस काम में मोटी कमाई का मौका न देखकर ठेकेदार गांधी ने इस सड़क पर हल्का-फुल्का काम किया और बीच में ही प्रोजेक्ट को छोड़ दिया। एमसीएफ की फाइलों में यह प्रोजेक्ट दफन हो चुका है। किसी अधिकारी ने जांच नहीं कराई कि आखिर जो पैसे बर्बाद हुए उसकी जवाबदेही किस पर है। बहुत ही रहस्यमय तरीके से वही रोड अब एफएमडीए भी बनाने जा रहा है।

इस संबंध में एफएमडीए की बैठक में बुधवार को फैसला हुआ कि शहर की तीन सड़कों को एफएमडीए स्मार्ट रोड के तौर पर बनाएगा। इनमें सेक्टर 11-12 की डिवाइडिंग रोड, हार्डवेयर चौक से सोहना रोड और चिमनीबाई धर्मशाला से तिकोना पार्क वाली रोड। इनमें से चिमनीबाई धर्मशाला वाली रोड वही है जिसका ठेका एमसीएफ गांधी ठेकेदार को दे चुका था। संयोग से गरिमा मित्तल एमसीएफ की कमिश्नर और एफएमडीए की डिप्टी सीईओ हैं, वो उस बैठक में मौजूद थीं, जिसमें इस सड़क को बनाने का फैसला हुआ। लेकिन गरिमा मित्तल ने प्रोजेक्ट पर कोई आपत्ति नहीं जताई। हो सकता है कि उन्हें उस समय इस घटनाक्रम की जानकारी नहीं रही हो लेकिन उन्हें तीनों ही सड़कों की बैकग्राउंड रिपोर्ट तो एक बार जरूर पता करनी चाहिए थी। गरिमा मित्तल स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट की भी सीईओ हैं। स्मार्ट सिटी ने भी पूरे शहर को खोदा हुआ है, ऐसे में उन्हें ऐसे सड़क विवाद की जानकारी न होना हैरान करता है। सूत्रों का कहना है कि रसूखदार ठेकेदारों की लॉबी फिर से सक्रिय हो चुकी है। उन्होंने एफएमडीए के सीईओ तक पहुंच बना ली है और उन्हीं की सलाह पर एफएमडीए के कुछ भ्रष्ट अफसर ऐसे फैसले ले रहे हैं। इनमें से आर.के. गांधी समेत तमाम ठेकेदार किसी न किसी सरकारी एजेंसी में ब्लैकलिस्टेड हैं। गांधी के खिलाफ तो विजिलेंस विभाग ने एफआईआर तक दर्ज कर रखी है लेकिन इसके बावजूद इस ठेकेदार को और कुछ अन्य को शहर की ऐसी सड़कों के ठेके मिल रहे हैं, जहां मामूली काम होना है और बिल मोटा बनना है। इन ब्लैकलिस्टेड ठेकेदारों ने अपनी फर्मों के नाम बदल लिए हैं और नए नाम से ठेके उठा रहे हैं। ऐसे तमाम ठेकेदारों को भाजपा नेताओं का संरक्षण मिला हुआ और नेताओं तक खुलेआम कमीशन पहुंच रहा है।

आने वाले समय में एफएमडीए के ऐसे तमाम प्रोजेक्ट सामने आने वाले हैं, जिनमें कोई नई बात नहीं होगी लेकिन खाने-कमाने का रास्ता जरूर निकाला जाएगा। मजदूर मोर्चा ने एफएमडीए बनाए जाने के बाद एक विस्तृत रिपोर्ट छापी थी, जिसमें साफ कहा गया था कि यह एक और सरकारी एजेंसी शहर का कल्याण करने नहीं, बल्कि सरकारी पैसे की बंदरबांट के लिए बनाई गई है।

हार्डवेयर चौक - सोहना रोड सड़क घोटाला

एफएमडीए ने हार्डवेयर चौक से सोहना रोड तक वाली सड़क को भी स्मार्ट रोड प्रोजेक्ट में शामिल किया है। मजदूर मोर्चा की छानबीन बताती है कि एमसीएफ इस सड़क पर भी करीब 15.66 करोड़ रुपये खर्च कर चुका है। इसके बावजूद इस सड़क को स्मार्ट बनाने के नाम पर एफएमडीए अब फिर से कई करोड़ रुपये डकारने जा रहा है। आखिर यह गोरखधंधा क्या है। बनी सड़क को

एफएमडीए के अधिकारी फिर से क्यों बनाना चाहते हैं। जाहिर है कि सड़क पर नहीं, उसके बजट पर नजर है।

कहां गए लगाए गए पेड़

चिमनीबाई धर्मशाला से तिकोना पार्क तक वाली एमसीएफ की सड़क पर करीब 1063 पेड़-पौधे लगाने का प्रोजेक्ट भी ठेकेदार को सौंपा गया था। यह काम 2018 से शुरू होकर 2019 में खत्म होना था लेकिन इस सड़क पर कोई चलेगा तो उसे पांच सौ तो क्या 200 पेड़ भी नजर नहीं आएंगे।

इस प्रोजेक्ट की आड़ में करीब 50 लाख रुपये एमसीएफ के बेइमान अफसरों ने खा लिए और कोई कार्रवाई नहीं हुई। इस तरह यह सड़क दरअसल घोटालों की सड़क है, जिस पर एफएमडीए की नजर है। कुछ पैसा एमसीएफ के अफसरों ने खाया और अब कुछ पैसा एफएमडीए के अधिकारी खाएंगे।

जुनैद का हत्यारा पंचायत में खुलेआम चुनौती देता घूम रहा

खंदावली के इस किशोर की लिंचिंग मामले में मिल रही है तारीख पर तारीख

भाजपाई सरकार चाहती है सांप्रदायिकता भड़के और खूनी दंगे हों

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: क्या किसी को बल्लभगढ़ के पास खंदावली गांव के उस जुनैद की याद है जिसे चलती ट्रेन से असावटी के पास उतारकर कुछ स्थानीय लोगों ने लिंच करके मार दिया और उसका शव वहीं फेंक दिया। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मीडिया ने इसे ट्रेन में सीट का झगड़ा बताकर मामले को हल्का करने की कोशिश की थी। जबकि पुलिस ने कोर्ट में 400 पेज की जो चार्जशीट पेश की है, उसमें उसने कहा है कि आरोपियों ने जुनैद की हत्या उसके धर्म से नफरत के आधार पर की है। 22 जून 2017 को घटी इस घटना को चार साल हो चुके हैं लेकिन परिवार को इंसाफ नहीं मिला, जबकि इस बीच आरोपी जमानत पर बाहर आकर नफरती महापंचायतों में हिस्सा लेकर जहर उगल रहे हैं। हर साल 22 जून जब आती है तो जुनैद की मां सायरा और पिता जलालुद्दीन गमगीन हो जाते हैं। हाल ही में जब मेवात के जुनैद नामक युवक की फरीदाबाद पुलिस की पिटाई से मौत हो गई तो मजदूर मोर्चा ने खंदावली गांव के जुनैद के मामले पर भी नजर डाली।

यह केस अभी भी फरीदाबाद की जिला अदालत में लंबित है। ट्रायल कोर्ट का रेकॉर्ड बताता है कि सितम्बर 2017 से लेकर जून 2021 तक यह केस 44 बार लिस्ट हुआ लेकिन हर बार तारीख लग जाती है। जुनैद के माता-पिता ने पंजाब हरियाणा हाई कोर्ट से इस मामले में सीबीआई जांच की मांग की थी। हाई कोर्ट की सिंगल बेंच ने सीबीआई जांच की मांग खारिज कर दी थी। फिर डबल बेंच ने अपना फैसला सुरक्षित रखा और बाद में उसने भी याचिका खारिज कर दी। जलालुद्दीन ने फिर सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई। कोरोना की वजह से वहां सुनवाई रुकी हुई है। इस मामले में पलवल निवासी आरोपी रामेश्वर दास जो एमसीडी इंस्पेक्टर था, उसे जमानत मिल चुकी है। अन्य आरोपी प्रदीप, गौरव और चंद्र प्रकाश फरीदाबाद की एक कंपनी में नौकरी करते थे। ये लोग भी जमानत पर हैं। इनमें से मुख्य आरोपी नरेश और रामेश्वर पर हत्या का आरोप लगा था लेकिन ये

खंदावली में जुनैद का घर

जुनैद की मां सायरा

जुनैद की फोटो दिखाता परिवार

दोनों और बाकी आरोपी 2018 से जमानत पर हैं।

मुख्य आरोपी मेवात में नजर आया

खंदावली के जुनैद की हत्या में मुख्य आरोपी नरेश कुमार अभी हाल ही में मेवात की उस पंचायत में नजर आया था जिसे आसिफ हत्याकांड के आरोपियों को छुड़ाने के लिए आयोजित की गई थी। आसिफ का मर्डर भी हाल ही में भीड़ ने किया था, जब वह अपने भाइयों के साथ मां की दवा लेकर खेड़ा खलीलपुर लौट रहा था। गांव के पास ही 20-22 लोगों की नफरती भीड़ ने धार्मिक नारे लगाते हुए उन्हें घेर लिया था।

बाद में कुछ आरोपी गिरफ्तार किए गए। जुनैद केस का आरोपी नरेश कुमार उस महापंचायत में पहुंचा था। वहां से उसका एक वीडियो वायरल हुआ। जिसमें नरेश कुमार को कहते सुना जा सकता है कि आसिफ मामले में चाहे आरोपियों की गलती है या नहीं, वह आरोपियों के साथ है। बेशक हमारी जान चली जाए। उस वीडियो में नरेश कह रहा है कि जब किसी मुस्लिम की हत्या होती है तो नेता लोग वहां पैसे लेकर पहुंच जाते हैं और वकील भी मुहैया कराते हैं। जय भारत, जय हिन्द। इसी नारे के साथ नरेश का भाषण समाप्त हो जाता है। इस वीडियो के सामने आने के बाद जुनैद के पिता सहम गए हैं। वह कहते हैं कि जरा सोचिए, जो शख्स मेरे बेटे की हत्या का आरोपी हो, वो इस तरह बोल रहा है तो हम लोगों पर क्या गुजरेगी।

जुनैद जलालुद्दीन और सायरा के आठ बच्चों में छठा था, और उसकी हत्या के बाद से, दंपति के किसी भी बच्चे ने दिल्ली के सदर बाजार में ट्रेन नहीं ली है। अगर उन्हें कहीं जाना है, तो वे साझा टेंपो

या बस लेते हैं। इसमें अधिक समय लगता है, अधिक खर्च होता है लेकिन हम उस ट्रेन को नहीं ले सकते। बेगम ने कहा, 'सिर्फ दहशत नहीं, बहुत दहशत में रहते हैं हम' (यह सिर्फ डर नहीं है, यह बहुत

डर है जिसके साथ हम रहते हैं)।

जलालुद्दीन ने जुनैद के साथ अपनी आखिरी बातचीत को याद किया जिस दिन उसकी हत्या की गई थी, इससे पहले कि वह अपने भाई हाशिम और उनके दो दोस्तों के साथ दिल्ली के लिए रवाना हुआ।

उसने अपने बेटे से कहा कि वह न जाए। "मैं डर गया था ... मैंने उससे बोला था की माहौल अच्छा नहीं है ... लोग सिर्फ दाढ़ी और टोपी देखकर मुसलमानों को मार रहे हैं।"जलालुद्दीन ने चार साल पहले भी इस रिपोर्टर ये यही बात कही थी। "मैंने उसे उससे कुछ दिन रुकने के लिए कहा, मैंने कहा कि मैं उसे दिल्ली खुद ले जाऊंगा लेकिन वह बहुत उत्साहित था।" दंपति का सबसे बड़ा बेटा इस्माइल अब दिल्ली में ड्राइवर है। जलालुद्दीन ने कहा, "मैंने उससे हमेशा सावधान रहने, अनावश्यक बहस में न पड़ने के लिए कहा है। ताकि और बेटा न खो सकूं।"

जलालुद्दीन कहते हैं "नरेश कुमार का जो वीडियो सामने आया है उसने मुझे डरा दिया है। वे लोग यही चाहते हैं, कि मुसलमान डरें। "हर कुछ हफ्तों में, हम गाय को मारने के संदेह में मुसलमानों के जेल जाने या पीटे जाने या मारे जाने की खबरें पढ़ते हैं। हम लोग इसलिए डरते हैं क्योंकि हम देखते हैं कि कैसे उनके (आरोपियों) जैसे लोगों को माला पहनाई जाती है और पार्टी का टिकट दिया जाता है। इसके बावजूद मुझे न्यायपालिका पर पूरा भरोसा है। हमें न्याय मिलेगा चाहे कितने भी साल लग जाएं।"

हैरानी की बात

मार्च 2018 में, 53 वर्षीय आरोपी रामेश्वर दास को जमानत देते हुए पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट ने कहा कि पीड़ितों और आरोपी के बीच प्रारंभिक विवाद था। केवल ट्रेन में सीटों के बंटवारे और धार्मिक टिप्पणी के अलावा और कुछ नहीं था"।

अपने बेटे की मौत के चार साल बाद 19 जून को जुनैद के पिता ने जजों के बयान का खंडन किया। जलालुद्दीन ने कहा, "यह हत्या सीट बंटवारे पर नहीं हुई थी, यह मेरे बेटे की धार्मिक पहचान को लेकर थी। वे वयस्क थे जिन्होंने एक बच्चे को मार डाला ... ऐसे लोग बच्चों को भी नहीं बख्शते।" यहां फिर से यह याद दिलाना जरूरी है कि पुलिस ने 400 पेज की जो चार्जशीट निचली अदालत में पेश की है, उसमें साफ कहा गया है कि धार्मिक नफरत के चलते यह हत्या हुई है। जज साहब ने जमानत देते हुए इस पर गौर नहीं किया।

जुनैद की हत्या के बाद, जलालुद्दीन को हार्ट अटैक आया और वो घर बैठ गए। हालांकि इससे पहले वह ड्राइवर थे और परिवार को पाल रहे थे। जुनैद का भाई शाकिर, जिसे सीने में पांच बार छुरा घोंपा गया था, महीनों तक बिस्तर पर पड़ा रहा, और एक ड्राइवर के रूप में उसकी नौकरी भी चली गई।

उसकी माँ सायरा बेगम ने कहा, "उसका घाव ठीक नहीं हुआ और आज तक वह उस हाथ से एक बाल्टी पानी तक नहीं उठा सकता है।" "वह शारीरिक श्रम नहीं कर सकता, और उसके पास डेस्क पर जॉब करने के लिए पर्याप्त शिक्षा नहीं है। वह तब से बेरोजगार है।" हालांकि घटना के बाद परिवार को उस समय कुछ आर्थिक मदद मिली थी, लेकिन वो पैसे अदालतों में खर्च हो चुके हैं।

2020 में महामारी और लॉकडाउन ने इस परिवार की हालत और खराब कर दी। भाई शाकिर, आदिल और कासिम की नौकरी की तलाश रुक गई और 16 वर्षीय छात्र फैसल ने पैसे बचाने के लिए दिल्ली के एक स्कूल में दसवीं कक्षा के बाद अपनी पढ़ाई बंद कर दी।